127
931
127 H P
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1543/1971

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं॰ Acc. No. 931

891.431
A38M

Mahatmaji ka Sandesh arthat Swarajya ki Lahr.

॥ वन्देमातरम् ॥

in Hindi

महात्माजी का सन्देश

Govt of U.P.

अर्थात

स्वराज्य की लहर

IMPERIAL ... DEPARTMENT
RECEIVED
10 DEC. 1930

संग्रहकर्ता व प्रकाशक—
पता ला० गिर्राजकिशोर अग्रवाल,
पीपलमंडी—आगरा।

प्रथम बार] एजन्टों की जरूरत है। [मूल्य)॥

मुद्रक—बाबू सूरजभान गुप्त केसरी प्रेस, बेलनगंज आगरा।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 931
Date 27.12.71
GOVT. OF INDIA

ओ३म्

झण्डे की प्रार्थना ।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झँडा ऊँचा रहे हमारा ।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला ॥
वीरों को हरषाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा ॥ १ ॥
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लख कर बढ़े जोश क्षण क्षण में
कांपे शत्रु देखकर मनमें, मिट जावे भव संकट सारा ॥ २ ॥
इस झंडे के नीचे निरभय लें स्वराज्य यह अविचल नि[श्चय]
बोलो भारत माता की जय स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा ॥ ३ ॥
आओ प्यारे वीरों आओ देश धर्म पर बलि २ जाओ
एक साथ सब मिल कर गाओ प्यारा भारत देश हमारा ॥ ४ ॥
इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे ।
विश्व मुग्ध करके दिखलावे तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥ ५ ॥

सर फ़रोशी की तमन्ना ।

(ले०—बिस्मिल)

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाज़ुये क़ातिल में है ॥
रह रवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरिये मंजिल में है ॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां ।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है ॥
आज फिर मक़्तल में क़ातिल कह रहा है बार बार ।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार ।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है ॥
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़ ।
सिर्फ़ मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है ॥

पुष्प--हृदय ।

चाह नहीं है सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊँ
चाह नहीं है प्यारी के गल पड़ूं हार में ललचाऊँ ॥
चाह नहीं है राजाओं के शव पर मैं डाला जाऊँ ।
चाह नहीं है देवों के सिर चढ़ू भाग्य पर इतराऊँ ॥
मुझे तोड़ कर हे बनमाली,
उस पथ में देना तू फेंक ।
मातृ भूमि हित शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक ॥

मौत से मत डरो ।

बुज़दिलों को ही सदा मौत से डरते देखा ।
गो कि सौ बार उन्हें रोज़ ही मरते देखा ॥
मौत से वीरों को हमने नहीं डरते देखा ।
तख्तए मौत पै भी खेल ही करते देखा ॥
मौत इकबार जब आना है तो डरना क्या है ।
हम सदा खेल ही समझा किये मरना क्या है ॥
वतन हमेशा रहे शाद काम और आज़ाद ।
हमारा क्या है अगर हम रहें रहें, न रहें ॥

एक निर्वासित का विलाप ।

परदेश में हैं हम दूर वतन, ऐ चर्ख़ हमें बरबाद न कर ।
कुछ हद भी है मुसीबत की तू हम पै सितम जल्लाद न कर ॥

आये हैं वतन को छोड़के हम घर-बारके छूटने का दिल पै है ग़म।
मारे हुये तकदीर के हम तू हम पै सितम बेदाद न कर॥
हम हिन्द के रहने वाले हैं कुछ-मुंह से न कहने वाले हैं।
दुख दर्द के सहने वाले हैं तू हम पै सितम ईजाद न कर॥
है "शमशा" मुकद्दर सोता है, रोने से भला क्या होता
क्यों हिन्द का नाम डुबोता है परदेश में तू फ़रियाद न कर॥

जितेन्द्र दास--गीत।

क्या लिखें आज़ाद होकर हम कहानी "दास" की।
दिल अगर होतो सुनो दिल से कहानी "दास" की॥
फाके मस्ती में भी मस्तों की तरह वो मस्त था।
जेल में ही कट गई सारी जवानी दास की॥
शौक से दुनियां के लोगों को यही कहना पड़ा।
देश सेवा के लिये थी जिन्दगानी दास की॥

वीर गर्जना।

भारत शेर जागो बदला है अब के ज़माना।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना॥
मत बुज़िदिली को हरगिज़ तुम पास दो फटकने।
आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना॥
स्वातंत्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना॥

दृढ़ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा ।
आकर के जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना ॥
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित ।
वालंटियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना ॥
दिल में झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ ।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली खाना ॥
"सरजू" समय यही है कुछ करलो देश सेवा ।
दो दिन की ज़िन्दगी है इसका नहीं ठिकाना ॥

तरानय फ़लक ।

बाग़ में सर सर का झोंका, आशियाना ले गया ।
अन्दलीबों को क़फस में, आबोदाना ले गया ॥
कुछ गुले गुलचीं का शिकवा, बुल बुले भारत न कर ।
मुझको पिञ्जरे में है तेरा, चह चहाना ले गया ॥
कौन कहता है जबर्दस्ती, से हम पकड़े गये ।
जेल में खुद हमको शोके, जेलखाना ले गया ॥
क्यों घटा अदबार की छाये, न अहले हिन्द पर ।
खींच कर यूरोप है सब, मालो खज़ाना ले गया ॥

नौ जवान की तमन्ना ।

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते मरते ।
नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते ॥
हमको कमज़ोर समझ बैठे हमारे दुश्मन ।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते ॥

ज़ुल्म करती है बहुत हिन्द पर नौकर शाही ।
उसकी बदचाल मिटा जायेंगे मरते मरते ॥
दिलों पर दुश्मनों के अपनी जवांमर्दी से ।
हिन्द का सिक्का बिठा जायेंगे मरते मरते ॥
जेलखाने की भी खुश होकर बढ़ायेंगे रौनक।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते ॥
मातृ भूमि के लिये जान निछावर करदें ।
सबक़ भारत को पढ़ा जायंगे मरते मरते ॥
हैं तो ना चीज़ मगर इतनी जुरअत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते मरते ॥
भगतसिंह, दत्त, दयानन्द, तिलक गांधी का।
सबको फ़रमान सुना जायेंगे मरते मरते ।

वीर जीतेन्द्र की भावना ।

फ़ाक़े करेंगे भूख से सदमे उठायेंगे ।
रोटी खराब जेल की हरगिज़ न खायेंगे ॥
दारो रसन से डर के न बुज़दिल कहलायेंगे ।
मर जायेंगे क़दम को पीछे न हटायेंगे ।
हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
ज़िन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे ॥
बैलों की तरह घास की सब्जी न खायेंगे ।
कूटेंगे न हम मूँज न चक्की चलायेंगे ॥
फन्दे सज़ा में फंस के न गर्दन झुकायेंगे ।

मूछों पै ताव देंगे अकड़ भी दिखायेंगे ॥

हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
जिन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे ॥

नंगे रहेंगे धूप की सख्ती उठायेंगे ।
लेकिन न तन पै ग़ैर के कपड़े सजायेंगे ॥
कुरबानियों का मुल्क को रस्ता दिखायेंगे ।
मर मरके अपनी कौम को जिन्दा बनायेंगे ॥

हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
जिन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे ॥

शहीदों का सन्देश

दिन खून का हमारे प्यारो ! न भूल जाना ।
खुशियों में अपनी हम पर आंसू बहाते जाना ॥
सय्याद ने हमारे चुन चुन के फूल तोड़े ।
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना ॥
गोली को खाके सोये जलयान बाग में हम ।
सूनी पड़ी कब्र पर दीया जलाते जाना ॥
हिन्दू और मुसलिमों की, होती है आज होली ।
बहते हमारे रंग में दामन भिगोते जाना ॥
कुछ कैद में पड़े हैं हम कब्र में पड़े हैं ।
दो बूंद आंसू इन पर 'प्रेमी' बहाते जाना ॥

शहीदों के खूं का असर

शहीदों के खूं का असर देख लेना ।
मिटायेंगे ज़ालिम का घर देख लेना ॥

झुका देंगे गरदन को हम ज़ेर खंजर ।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना ॥
जो खुदगर्ज़ गोली चलाते हैं हम पर ।
तो क़दमों पै उनका ही सर देख लेना ॥
जो नख्ल हमने सींचा है खूने जिगर से ।
वह होगा कभी बारवर देख लेना ॥
खुजन्दी हुआ हिन्द आज़ाद अपना ।
छपेगी यह एक दिन ख़बर देख लेना ॥

भजन ।

है वतन के वास्ते अक्सीर बन्देमातरम् ।
देश के खादिम की है जागीर बन्देमातरम् ॥
ज़ालिमोंको है अगर बन्दूक पर अपनी गुरूर ।
है इधर हम बेकसों का तीर बन्देमातरम् ॥
क़तल की धमकी न दे हमको हमारे सब्र से ।
तेग़ पर हो जायगी तहरीर बन्देमातरम् ॥
किस तरह भूलूं इसे मैं जबकि क़िस्मत में मेरी ।
लिख चुका है रार्क़ि में तहरीर बन्देमातरम् ॥
फ़िक्र क्या जल्लाद ने गर क़त्ल पर बांधी कमर ।
रोक देगी दूर से शमशीर बन्देमातरम् ॥
ज़ुल्म से गर कर दिया ख़ामोश मुझको देखना ।
बोल उठेगी फिर मेरी तस्वीर बन्देमातरम् ॥
संतरी भी मुज़तरिब थे जब कि हर झंकार में ।
बोलती थी जेल में जंजीर बन्देमातरम् ॥

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:—

ज्वालाप्रसाद वर्मा, बुकसेलर, आगरा ।